



Original Article

21 वीं सदी के सिनेमा में दलित समस्याएँ

प्रा. डॉ. संदिप तानाजी कदम

सहायक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग

श्री आर. आर. पाटिल महाविद्यालय, सावलज

Manuscript ID:

IJAAR-C130334

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 169 - 172

Submitted: 25 Jan. 2026

Revised: 01 Feb. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. डॉ. संदिप तानाजी कदम

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785873

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785873>



Creative Commons



सार:

भारतीय समाज का एक अंग दलित है, जो परम्परा से, प्राचीन काल से शोषित, उपेक्षित, अपमानित रहा है। डॉ. अम्बेडकर, महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले, शाहू महाराज, पेरियार एवं राजा राम मोहन राय की प्रेरणा से दलित समाज जाग उठा है। जैसे पढ़ा-लिखा या दलित युवा अपनी व्यथा-कथा शब्दबद्ध कर रहा है वैसे ही सिनेमा ने भी दलित की व्यथा और समस्याओं का चित्रण बड़े पैमाने पर किया है। 21 वीं सदी का सिनेमा जितने तीव्र बदलावों से गुजरा है, उतना विगत 100 वर्षों में नहीं देखा गया। निःसंदेह सिनेमा एक प्रभावी माध्यम है, जिसने समाज और संस्कृति को गहराई तक प्रभावित किया है। सिनेमा ने जिस तरह समाज के विभिन्न अंगों को छुआ है, वैसे ही दलित की समस्याओं पर भी अपनी नजर डाली है। 21 वीं सदी के सिनेमा ने तो दलित वर्ग की असंख्य समस्याओं का चित्रण किया है जो हमें निम्नलिखित शोधालेख में दिखायी देता है।

मुख्य शब्द: दलित, सिनेमा, समाज, जातीयता, शोषण, अन्याय-अत्याचार, अज्ञानता, छुआछूत, अधिकार

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. डॉ. संदिप तानाजी कदम. (2026). 21 वीं सदी के सिनेमा में दलित समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 169 - 172. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785873>

प्रस्तावना:

दलित शब्द के मूल अर्थ को जब हम ढूँढने का प्रयास करते हैं तब पता चलता है कि 'दलित' शब्द की व्युत्पत्ति 'दल' धातु से हुई है। जिसका अर्थ पिछड़ा, शोषित, रौंदा हुआ, अविकसित, अछूत, कुचला गया, मसला हुआ एवं विनष्ट हुआ

है। दलित को महात्मा गांधी ने 'हरिजन' कहा है। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने 'शेड्यूल्ड क्लास' कहा है। सरकारी भाषा में 'डिस्प्रेस्ड' का प्रयोग हुआ है। 1919 में पिछड़ा वर्ग का उल्लेख मिलता है। शिक्षा, अधिकार, भौतिक संपत्ति से दूर



रखा गया, गाँव के बाहर झुग्गी झोंपड़ी में रहनेवाला, मजदूरी करनेवाला हीन कर्मरत दलित है। उसके छूने से पाप होता है, ऐसी हीन मान्यता थी। जातिव्यवस्था से विकृत बने समाज का एक अंग दलित है।

साहित्यिक कृति के माध्यम से समाज के जिस वास्तविक और आदर्श रूप को प्रस्तुत किया जाता है, उसी प्रकार सिनेमा भी समाज के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साहित्य के उपरान्त सिनेमा ने भी दलित वर्ग के प्रति न सिर्फ अपनी सहानुभूति दर्शायी है बल्कि दलित वर्ग के उत्थान का समाधान भी प्रस्तुत किया है। दलितों के जीवन में नई-नई समस्याएँ पैदा हो रही हैं और उसी समस्याओं का सामना उन्हें हर दिन करना पड़ रहा है। जैसे की सामाजिक वर्णव्यवस्था एवं जातिभेद की समस्या, भेदभाव की समस्या, रुढ़िवादिता की समस्या, भूमि और संपत्ति के संघर्ष की समस्या, अधिकार की समस्या, अत्याचार, शोषण की समस्या, अज्ञानता की समस्या, जातीयता एवं उच्च-नीचता की समस्या, अंधविश्वास की समस्या, अवैध यौन संबंध की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, धर्मांतरण की समस्या, अर्थाभाव की समस्या एवं छुआछूत की समस्या आदि समस्याओं का चित्रण हमें 21 वीं सदी के दलित सिनेमा में दिखायी देता है।

दलित जीवन की मूल समस्या अज्ञान ही थी। सभी समाज सुधारकों ने इस पर बल दिया। उन्होंने सवर्णों की मानसिकता में परिवर्तन करना, दलितों में शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाना यह दोहरी जिम्मेदारी निभाई। राजकुमार संतोषी द्वारा निर्देशित 'लज्जा' फिल्म 2001 में प्रदर्शित हुई थी। जिसमें दलित युवक प्रकाश को माँ पति के अनुपस्थिति में दिन-रात मेहनत करके शहर में पढ़ाती है। उसे कम्प्यूटर की शिक्षा देती है। वह वकिल की भी पढ़ाई कर रहा था तभी उसे ठाकुर गजेन्द्र की बेटी सुशीला से प्यार हो जाता है। ठाकुर को जब यह बात पता चलती है तब वह प्रकाश और उसकी माँ को मारता है। अपमान करता है। प्रकाश को जान से मारने की योजना बनाता है,

सुशीला यह बात प्रकाश को बताती है तब वह जंगल में भटकते हुआ फुलवा के पास जाता है। जिसके कारण वह पढ़ने का मौका मिलने पर भी पढ़ नहीं पाता है। 'फैन्ट्री' नागराज मुंजले निर्देशित पहली फिल्म है। जो 14 फरवरी 2014 को प्रदर्शित हुई थी। फिल्म दलित जीवन की त्रासदी पर आधारित है। जिसमें प्रमुख पात्र शिब्या है। जो सातवीं कक्षा में पढ़ता है। वह पाटिल की लड़की शालू से प्रेम करता है, पर शालू उससे प्रेम नहीं करती है। शिब्या स्कूल के बाद खेत में काम करता है। आईस्क्रीम बेचता है। सुअर को पकड़ने का काम करता है। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी और जातिवाद से पीड़ित दलित बच्चा स्कूल से वंचित रह जाता है। पेट भरने के लिए शिब्या को स्कूल छोड़ना पड़ता है।

एक ओर अज्ञानता दलित जीवन की मूल समस्या है, तो दूसरी ओर जाति-व्यवस्था, छुआछूत, वर्णव्यवस्था एवं उच्च-नीचता आदि समस्याओं से भी दलित पीड़ित हैं। डॉ. अम्बेडकर, महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले, शाहू महाराज, पेरियार, राजा राम मोहन राय आदि ने जाति-व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष किया। प्रेम और मनुष्य सेवा को अपना धर्म माना। किंतु सिनेमा पर ब्राह्मण एवं सवर्ण लोगों का वर्चस्व होने के कारण उन्होंने प्रेम और सेवा को अपना धर्म न मानकर धन कमाने हेतु फिल्मों का निर्माण किया हुआ दिखायी देता है। अधिकांश फिल्म निर्देशकों ने "दलित फिल्मों में जातिवादी व्यवस्था का हल गांधीवादी, सुधारवादी, सहानुभूति, दया, त्याग, समर्पण का रुख में अपनाया है। शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, जातिगत बराबरी, आंतरजातीय विवाह आदि सवाल फिल्मों से गायब रहे। जो दलित आन्दोलन के मुख्य विषय रहे हैं।"¹

सन 2012 में प्रदर्शित 'शुद्र' इस फिल्म में जातिव्यवस्था या वर्णव्यवस्था की समस्या दिखायी देती है। फिल्म में जो दलित पात्र हैं उनपर गाँव के ठाकुर एवं ब्राह्मण अत्याचार करते हैं। चार साल की छोटी दलित बालिका का



मंदिर में जाने से मंदिर अपवित्र होता है। उसे देखकर ब्राह्मण कहता है यह तुच्छ बालिका कहाँ घुसे चली आ रही है? अरे क्या तुम्हें मालूम नहीं कि नीच जाति के लिए मंदिर में प्रवेश वर्जित है। सुबह-सुबह नीच कदमों से पवित्र भूमि को अपवित्र कर दिया। अब गंगाजल डालकर इसे पवित्र करना होगा। दूसरी ओर एक बुजुर्ग दलित आदमी को प्यास लगती है। उसका बेटा पानी लेने नदी में जाता है। लेकिन नदी में नहाने वाले सवर्णों के बच्चों ने उसे पानी देने से इनकार कर दिया। इतना ही नहीं उसे पत्थर से भी मारा। वह लुहलुहान हो गया। जब उसने पिता के पास आकर देखा तब उसके पिता दुनिया छोड़ चुके थे।

फिल्म निर्देशक जब्बार पटेल ने सन 2000 में 'डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर' इस फिल्म को प्रदर्शित किया है। जिसमें छुआछूत की समस्या पर प्रकाश डाला है। फिल्म की शुरुआत शूद्रों के अमानवीय-अत्याचार से होती है। ऊँची जाति के लोग शूद्रों से बात नहीं करते हैं। आवाज सुनते ही वह रास्ते से हट जाते हैं। नाई भैंस के बाल काटता है लेकिन छुआछूत होगी इस कारण दलितों के नहीं काटता है। "नाई अछूतों के बाल काटता नहीं था। चाहे जितने पैसे देना चाहे तो भी नहीं। भीमा की एक छोटी बहन अपने भाइयों के बाल काटती थी।"² फिल्म में गाडीवान अम्बेडकर की चमार जात का पता चलने पर उन्हें गाडी से उतार देता है। गालियाँ देने लगता है। कहता है, "मुझे तुम्हारी छुत हो गई। मेरी गाडी को भी छुत हो गई। बैल भी भ्रष्ट हो गए। अब मुझे नहाना होगा। गाडी धोनी होगी। बैलों को नहलाना होगा। चलो, पहले गाडी से उतर जाओ।"³ आशुतोष गोवारीकर के निर्देशन में बनी 'लगान' फिल्म 2001 में प्रदर्शित हुई थी। उस फिल्म में भी कचरा गांव का अछूत सफाई सेवक था। गांव की क्रिकेट टीम में उसे लेने के लिए कोई राजी नहीं था। गांववाले उसे छूते तक नहीं थे। उससे घृणा करते थे। वे कचरा के मैच में शामिल होने की वजह से मैच खेलने से मना कर देते हैं। इसप्रकार दलित वर्ग में छुआछूत जैसी समस्या आज भी दिखायी देती है।

दलित जीवन की प्रधान समस्या शोषण है। जमींदार, सरकारी अधिकारी, पुलिस, धार्मिक व्यक्ति, राजनेता, महाजन द्वारा दलितों का शोषण होता है। 'मातृभूमि' मनीषा झा निर्देशित फिल्म 18 जुलाई 2005 में प्रदर्शित हुई थी। इसमें दलित कन्या कलकी की कहानी है। पिता कलकी को सबकी नजरों से बचाकर रखता है। लेकिन एक दिन पंडित जी नहाने के लिए नदी के पास जाते हैं। वहाँ उन्हें खुबसूरत कलकी दिखाई देती है। कलकी का पिता पांच लाख और पांच गाय लेकर अपनी बेटी को शादी के नाम पर बेच देता है। कलकी शादी कर ससुराल आती है। उसी दिन पांच भाई और ससुर उसके साथ गैंगरेप करते हैं। इतना ही नहीं एक दिन पानी में डुबोकर उसकी हत्या कर देते हैं। 'मोहनदास' उदय प्रकाश की कहानी पर आधारित फिल्म है जो 2009 में प्रदर्शित हुई थी। इस फिल्म का नायक मोहनदास दलित है। बी. ए. पढ़ा लिखा होने के बावजूद भी उसे नौकरी नहीं मिलती। उसे मिली नौकरी पर अमीर घर का बेटा नौकरी करता है। वह न्याय पाना चाहता है पर हर जगह उसका शोषण होता दिखायी देता है। 'शूद्र' यह फिल्म 2012 में प्रदर्शित हुई थी। जिसमें दलितों की त्रासदी का चित्रण है। एक दिन ठाकुर दलित बस्ती में सुंदर लड़की को देखता है और उसके पति सरना को कहता है इसे कोठी पर लेकर आ श्याम को सरकार ने बुलाया है। इससे पता चलता है कि, "जमींदार शूद्रों की बहू, बेटियों, पत्नी, बहन पर बलात्कार करते हैं। शूद्रों की औरतें ठाकुर की कामवासना, मनोरंजन और भोग की वस्तु हैं। दलित महिला गर्भवती है फिर भी ठाकुर जब बुलाये तब उसे कोठी पर जाना ही है। गर्भवती जुगनी ने जब ठाकुर के बुलाने पर जाने से मना किया था तब ठाकुर ने उसे पूरे गांव में नंगा घुमाया था।"⁴ 'तीसरी आजादी' जब्बार पटेल निर्देशित फिल्म है जो 2012 में प्रदर्शित हुई थी। इसमें दलित पर किए गए अन्याय-अत्याचार से संबंधित घटनाओं का चित्रण मिलता है। फिल्म में ब्राह्मणों की रक्षा के लिए दशावतार की छल कथा रची गयी। महर्षि शंभुक की हत्या की गई।



एकलव्य का अंगूठा काट दिया गया। शूद्रों को धर्म के नाम पर नरक यातना दी गई। अछूतों के गले में मटका और पीठ पीछे झाड़ू बांधा गया हैं।

21 वीं सदी के भारतीय सिनेमा में दलितों को उनके आत्म-सम्मान, शिक्षा और अधिकारों के लिए लड़नेवाले सशक्त पात्रों के रूप में दिखाया जा रहा हैं। प्रकाश झा निर्देशित 'आरक्षण' यह फिल्म 2011 में प्रदर्शित हुई थी। फिल्म की कहानी मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के एक कॉलेज में साथ-साथ पढ़ रहे दो घनिष्ठ दलित-सवर्ण मित्र दीपक और सिद्धार्थ की है। आरक्षण जैसे विवादास्पद मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट का निर्णय सार्वजनिक होता है और उनके बीच दरार पैदा हो जाती है और वे अपने-अपने जातीय हितों को लेकर आमने-सामने हो जाते हैं। श्री नारायण सिंह के निर्देशन में सन 2017 में प्रदर्शित फिल्म 'टॉयलेट-एक प्रेम कथा' शौचालयों की अनुपलब्धता के कारण महिलाओं को होनेवाली परेशानियों और समस्याओं से अवगत कराती हैं। फिल्म की नायिका जया के माध्यम से स्त्रियों में खुले में शौच की परंपरा के विरुद्ध आवाज उठाने और स्वच्छता के प्रति जागृत होती चेतना को दर्शाया गया है। अश्विनी अय्यर तिवारी के निर्देशन में 2020 में आई फिल्म 'पंगा' हर उस स्त्री के लिए प्रेरणास्रोत है, जो अपने सपनों को पूरा करने की इच्छा रखती हैं। फिल्म में कबड्डी चैम्पियन रही जया पत्नी और माँ बनने के बाद भी मैदान में उतर कर सफलता प्राप्त करती है। अनुभव सिन्हा द्वारा सन 2020 में आई फिल्म 'थप्पड़' अमृता के माध्यम से स्त्रियों पर की जानेवाली घरेलू हिंसा के मुद्दे को सहज ढंग से उठाती है। पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते हैं किंतु आक्रोशवश पति सबके सामने अमृता को थप्पड़ मार देता है। आगे चलकर

पति अमृता से माफी भी मांग लेता है किंतु अमृता उस थप्पड़ की गूंज को भूला नहीं पाती है। इस तरह दलितों से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का चित्रण फिल्मों में दिखाई देता हैं।

निष्कर्ष:

साहित्य, सिनेमा और समाज इन तीनों के संयोग से समाज और मनुष्य निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। साहित्यिक कृति ने समाज के वास्तविक और आदर्श रूप को प्रस्तुत किया है, उसी प्रकार सिनेमा ने भी समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। सिनेमा के अहम् भूमिका के बावजूद भी 21 वीं सदी में दलितों की समस्याओं का चित्रण फिल्मों में अधिक मात्रा में हो रहा हैं। दलित जीवन की मूल समस्याओं में अज्ञानता, शिक्षा, जाति-व्यवस्था, छुआछूत, वर्णव्यवस्था, उच्च-नीचता, अन्याय-अत्याचार, शोषण, आत्म-सम्मान, अधिकार एवं नारी से जुड़ी समस्याओं का चित्रण उपर्युक्त शोधालेख में हुआ दिखायी देता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. रंजीता सरोज, हिंदी सिनेमा में दलित स्त्री, 'अपनी माटी' पत्रिका, सितम्बर-नवम्बर 2015, पृ.43
2. डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे, डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998, पृ.32
3. डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे, डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998, पृ.31
4. डॉ.अनिल कांबले, सिनेमा और साहित्य, प्रज्ञा प्रकाशन, प्र. सं. 2017, पृ.306